महानिदेशक का संदेश

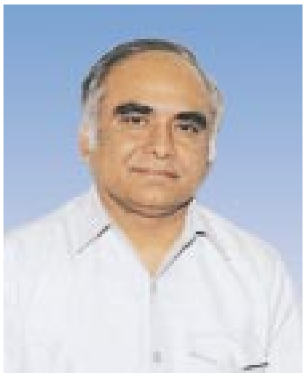

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद जैवआयुर्विज्ञान/स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में देश का प्रमुख शोध संगठन है। इसके कार्य देश भर में फैले इसके विभिन्न संस्थानों, केन्द्रों और उन्नत केन्द्रों के माध्यम से किए जाते हैं। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद के कुछ संस्थानों के नाम परिवर्तित किए गए यथा–राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान (पूर्व नाम केन्द्रीय जालमा कुष्ठरोग संस्थान), आगरा; राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान (पूर्व नाम आयुर्विज्ञान सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान); और राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (पूर्व नाम मलेरिया अनुसंधान केन्द्र), दोनों दिल्ली स्थित।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद ने अपने अनुसंधान प्रयासों को न केवल राष्ट्रीय प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में बल्कि आधुनिक जैविकी के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान की दिशा में भी अग्रसित किया है। बिल और मेलिण्डा गेट्स फाउण्डेशन की वित्तीय सहायता में *आवाहन इंडिया एड्स इनीशिएटिव* के अन्तर्गत परिषद के पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान द्वारा भारतीय आबादी से जैविक एवं व्यवहारात्मक प्रवृत्ति संबंधी आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं। भारत में मानव पैपिलोमा वाइरस (एच पी वी) वैक्सीन के चिकित्सीय परीक्षण की शुरुआत के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और मर्क के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और देश एवं विदेश में अन्य वैज्ञानिक एजेंसियों के बीच राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोगों में महत्वपूर्ण वृद्धि और विकास हुआ है। एम आर सी (साउथ अफ्रीका), एफ आई ओ सी आर यू ज़ेड (ब्राजील) और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के बीच दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए जिसका उद्देश्य सामान्य रुचि के क्षेत्रों में मिलकर शोध कार्य करना है। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान पारस्परिक देशों के बीच कुल 73 वैज्ञानिकों के भ्रमण का प्रबंध किया गया जो भारत से दौरे पर गए अथवा भारत के दौरे पर आये।

इस वर्ष के दौरान परिषद ने मानव इंफ्लुएंजा के लिए निगरानी कार्य संपन्न किया। चण्डीपुरा विषाणु मस्तिष्कशोथ और चिकनगुण्या के प्रकोप का भी अध्ययन किया गया। इस वर्ष के दौरान एक बहुकेन्द्रीय स्थल तैयार करने की गतिविधि आरंभ की गई जिसका उद्देश्य *हीमोफिलस इंफ्लुएंजी बी* मस्तिष्कशोथ और न्युमोनिया के निवारणशील भार का आकलन करने के लिए एक वैक्सीन प्रोब अध्ययन की शुरुआत करना है।

वर्ष 2005 के दौरान परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा 450 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए गए। वर्ष 2005-2006 के दौरान परिषद द्वारा कुल 779 अनुसंधान परियोजनाओं और 372 फेलोशिप्स को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* का इंपैक्ट फैक्टर वर्ष 2004 में 0.600 की तुलना में वर्ष 2005 में बढ़कर 0.869 हो गया।

प्रतिवेदित अवधि के दौरान कुल 8 पेटेंट आवेदन फाइल किए गए। परिषद के पॉण्डिचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र द्वारा *बैसिलस थुरिंजिएंसिस* से मच्छर लार्वानाशी उत्पाद के लिए विकसित एक प्रक्रिया को पेटेंट की मंजूरी प्राप्त हुई।

परिषद के जैव सूचना विज्ञान केन्द्र ने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों, केन्द्रों और मुख्यालय की नेटवर्किंग प्रक्रिया पूरी कर ली है जिसमें स्टाफ सदस्यों के कार्य निष्पादन एवं उनकी दक्षता में वृद्धि के साथ वैज्ञानिकों में संचार को अत्यधिक बेहतर बनाया गया है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट को वैज्ञानिक समुदाय एवं नागरिक समाज के लिए लाभदायक सूचनाओं को सम्मिलित करते हुए नियमित रूप से आधुनिक बनाया जाता है। इसके परिणामस्वरूप परिषद और अन्य एजेंसियों, वैज्ञानिकों और रोजगार के आवेदकों के बीच सूचनाओं के पारस्परिक आदान–प्रदान में वृद्धि हुई है।

मुझे वित्तीय वर्ष 2005-2006 के दौरान भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की शोध गतिविधियों के मुख्य अंश को प्रस्तुत करने में प्रसन्नता हो रही है।

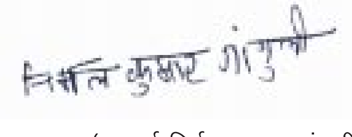

(आचार्य निर्मल कुमार गांगुली)

महानिदेशक